आदि अलग-अलग इन्द्रियों का मूल शाखाओं का ऊपरी भाग है तथा शब्द, रूप, स्पर्श आदि विषय पत्ते हैं। इस वृक्ष की जड़ें, जिनका आधार कर्म है, नाना प्रकार के इन्द्रिय सुख-दुःख की परिणाम हैं। इस प्रकार विषयभोग से जीव राग-द्वेष को प्राप्त होता है। धर्म-अधर्म की प्रवृत्तियाँ सब ओर फैली गौण जड़ें हैं। इस संसार-वृक्ष की मुख्यमूल तो ब्रह्मलोक से ही है; अन्य जड़ें मनुष्य लोकों में हैं। स्वर्गीय लोकों में पुण्यफल भोगने के बाद जीव इस पृथ्वी पर लौटकर फिर उच्चलोकों की प्राप्ति के लिए कर्म के परायण हो जाता है। इसी से मनुष्यलोक को कर्मभूमि कहते हैं।

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसंगशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा।।३।।
ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।।४।।

न=नहीं; **रूपम्**=रूप; **अस्य**=इस वृक्ष का; **इह**=इस (मनुष्य लोक) में; **तथा**=वैसा; **उपलभ्यते**=अनुभव में आता; **न**=नहीं; **अन्तः**=अन्त है; **न**=नहीं; **च**=और; **आदिः**=आदि है; **न**=न; **च**=और; **सम्प्रतिष्ठा**=आधार है; **अश्वत्थम्**=पीपल के पेड़ को; **एनम्**=इस; **सुविरूढमूलम्**=अति दृढ़ जड़ वाले; **असंगशस्त्रेण**=वैराग्यरूप कुठार से; **दृढेन**=उत्कट; **छित्त्वा**=काटकर; **ततः**=उसके पश्चात्; **पदम्**=परमपद को; **तत्**=उस; **परिमार्गितव्यम्**=खोजना चाहिए ; **यस्मिन्**=जिसमें; **गताः**=गए हुए ; **न**=कभी नहीं; **निवर्तन्ति**=गिरते; **भूयः**=फिर; **तम् एव**=उन्हीं; **च**=तथा; **आद्यम् पुरुषम्**=आदि-पुरुष भगवान् की; **प्रपद्ये**=शरण में जाता हूँ (इस प्रकार); **यतः**=जिनसे; **प्रवृत्तिः**=संसार रूप प्रवृत्ति; **प्रसृता**=विस्तृत हुई; **पुराणी**=चिरन्तनी।

अनुवाद

इस वृक्ष का असली रूप इस संसार में प्रत्यक्ष नहीं होता। इसके आदि, अन्त अथवा आधार को भी कोई नहीं जान सकता। इसलिए इस संसार-वृक्ष को दृढ़ निश्चय के साथ वैराग्यरूप शस्त्र के द्वारा काट कर, फिर उस परमपद को खोजना चाहिए, जिसे प्राप्त होकर संसार में फिर नहीं आना पड़ता। इसके लिए उन्हीं आदिपुरुष श्रीभगवान् के शरणागत हो जाय, जिनसे यह पुरातन संसार-प्रवृत्ति फैली है और अनादिकाल से जिनके आश्रित है।।३-४।।

तात्पर्य

स्पष्ट उल्लेख है कि इस अश्वत्थवृक्ष के यथार्थ रूप को प्राकृत-जगत् में नहीं जाना जा सकता। इसकी जड़ें ऊपर हैं, अतः असली वृक्ष का विस्तार दूसरी ओर है। इस वृक्ष का आदि-अन्त किसी को भी दिखाई नहीं देता। फिर भी, इसके कारण को तो खोजना ही होगा। ''मैं अपने पिता का पुत्र हूँ, मेरे पिता का जन्म अमुक से हुआ,'' इस प्रकार अन्वेषण करता हुआ मनुष्य ब्रह्मा तक पहुँच जाता है, जो स्वयं